"राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में अभिवृद्धि में आने वाली समस्यायें एवं उनका समाधान" :

भा.वा.अ.शि.प. में हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला

आज दिनांक 25 फरवरी 2014 को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून में "राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में अभिवृद्धि में आने वाली समस्यायें एवं उनका समाधान" विषय पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री शैवाल दासगुप्ता ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि किसी भी कार्य को करने के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति का होना परम आवश्यक है। उन्होने चीन, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों का उदाहरण देते हुए कहा कि इन देशों की उन्नति में उनकी मातृ भाषा का अत्यधिक योगदान है। हमें भी उनका अनुसरण करते हुए अपनी राजभाषा हिन्दी उन्नति के लिए प्रयास करना होगा।

इस कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. दिनेश चमोला, राजभाषा प्रभारी, भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून थे। डॉ. दिनेश चमोला ने 'अक्षर' की व्याख्या करते हुए कहा कि इसका अर्थ ही है कि जिसका क्षरण न होता हो। उन्होने कहा कि हम भाषा का प्रयोग मात्र एक उपकरण के रूप में कर रहें हैं और हम क्रमशः शब्द की शक्ति से वंचित होते जा रहें हैं। उन्होने पढ़ने लिखने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा –*''पढ़ना लिखना कम हुआ, बढ़ने लगे तनाव''*। उन्होने शब्दावली आयोग के संदर्भ को लेते हुए कहा कि हमे सभी भाषाओं के शब्दों का स्वागत करते हुए भाषा की सम्प्रेषणीयता को बढ़ाना है।

श्री विवेक खाण्डेकर, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने कार्यशाला की भूमिका पर बोलते हुए कहा कि अनुवाद के स्थान पर स्वतः मस्तिष्क में आने वाली शब्दावली का प्रयोग करने से भाषा प्रभावी बनेगी और सरल भी रहेगी। उन्होने कहा कि विस्तार निदेशालय और हिन्दी प्रकोष्ठ के सतत प्रयासों के फलस्वरूप दैनिक सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। उन्होने कहा कि हमने पूर्व में उपयोगी और व्यवहारिक प्रशिक्षण दिए हैं और भविष्य में भी ऐसे आयोजन किए जाते रहेंगे। किसी भी भाषा का प्रयोग उसके समावेशन पर निर्भर करता है और प्रभावी सम्प्रेषण के लिए हमें उस भाषा में ही स्वतःस्फूर्त विचार प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। उन्होने हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि के लिए सभी कर्मचारियों के सम्मिलित और सतत प्रयासों के प्रति सराहना और आभार व्यक्त किया।

कार्यशाला में भा.वा.अ.शि.प. के 50 से अधिक वैज्ञानिकों तथा विभिन्न संवर्गों के कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का समापन सभी को धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

A Training Workshop on Official Language Hindi at ICFRE

A Training workshop on official language Hindi was organized at Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE), Dehradun on 25th February 2014. Speaking as the Chief Guest, Shri Saibal Dasgupta, DDG (Extn.), ICFRE, Dehradun emphasized the need to work in Hindi. He elaborated that people in the countries like China, France, Germany etc. use their mother tongue in their day- to- day business and this is an important factor in their progress. He further called upon all the officials and staff of ICFRE to make every effort for promotion and implementation of official language Hindi in our official work.

The main Speaker of the workshop Dr. Dinesh Chamola, In-charge Rajbhasha, Indian Institute of Petroleum (IIP), Dehradun elaborated the meaning of *Akshar* – i.e. a thing which never deteriorates. He told that we are using the language as equipment and we are being deprived from the power of the word, as a result. He also viewed that for the sake of greater communication we should be open for accepting words from different languages.

Shri Vivek Khandekar, ADG (Media and Extension), ICFRE welcomed the participants. He opined that the language must be spontaneous. He said that Hindi can be used in every day work and the usage has gone up due to sustained efforts of Directorate of Extension and Hindi cell. We have imparted useful and practical trainings and exposures in past and will continue to do so in future as well. Use of any language depends upon internalisation of same and to communicate effectively we need spontaneity of thought process in language itself. Concerted and sustained efforts of all employees for enhanced use of Hindi in daily work was acknowledged and appreciated as well.

More than 50 participants from ICFRE participated in the workshop.